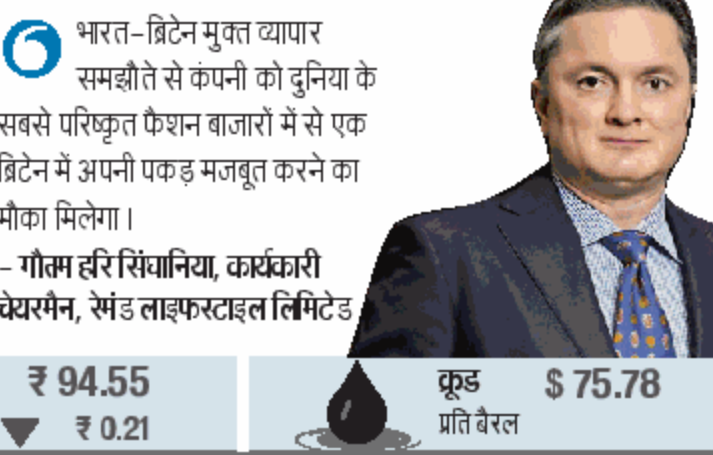


बिजनेस



भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते से कंपनी को दुनिया के सबसे पक्रिष्ठ फैशन बाजारों में से एक ब्रिटेन में अपनी एक इज मजबूत करने का मौका मिलेगा।

Market summary table with columns for Sensex (76,991.22), Nifty (24,021.65), Gold (₹ 1,48,100), Silver (₹ 2,31,000), Dollar (₹ 94.55), and Crude (₹ 75.78).

एक नजर में

सोने में 1,200 तो चांदी में 4,000 रुपये की गिरावट

नई दिल्ली: कमजोर वैश्विक रुझानों के बीच डॉलर के मजबूत होने से बुधवार को सोने की कीमत 1,200 रुपये घटकर 1,48,100 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई, जबकि मंगलवार को यह 1,49,300 रुपये पर बंद हुआ था।

भारत की वृद्धि दर सुस्त पड़कर 6.6% रह जाएगी

नई दिल्ली: एसएंडपी ग्लोबल रेटिंग्स ने कहा है कि उर्जा की कमी, सामान्य से कम मानसून और वैश्विक वृद्धि में सुस्ती से चालू वित्त वर्ष में भारत की जीडीपी वृद्धि दर घटकर 6.6 प्रतिशत पर रहने का अनुमान है।

भारत-ब्रिटेन एफटीए को लागू करने पर करेंगे चर्चा

नई दिल्ली: भारत व ब्रिटेन के व्यापार मंत्री इस सप्ताह लंदन में 'व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौता (सीईटीए)' को लागू करने से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करेंगे।

ब्याज दरें बढ़ाने पर चर्चा करना जल्दबाजी होगी

आरबीआइ गवर्नर बोले- पश्चिम एशिया में हो रहे घटनाक्रम पर नजर, महंगाई को लेकर ज्यादा सतर्क

नई दिल्ली, प्रे: आरबीआइ गवर्नर संजय मल्होत्रा ने कहा है कि केंद्रीय बैंक की पश्चिम में हो रहे घटनाक्रम पर नजर रखनी होगी और इस समय ब्याज दरें बढ़ाने के बारे में बात करना जल्दबाजी होगी।

- भविष्य में बढ़ सकते हैं जोखिम, महंगाई और आर्थिक वृद्धि हो सकती है प्रभावित
जून में हुई एम्पीसी की बैठक में आरबीआइ ने वृद्धि के अनुमान को कर दिया था कर्म



आरबीआइ गवर्नर संजय मल्होत्रा

पश्चिम एशिया में तनाव कम होना इकोनमी के लिए सकारात्मक

मल्होत्रा ने कहा कि पश्चिम एशिया संघर्ष में तनाव कम होना पूरी दुनिया और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक बड़ी सकारात्मक बात है और यह वृद्धि और महंगाई दोनों के लिए अच्छी खबर है।

महंगाई का असर अन्य चीजों पर होने की बात कहना अभी पूरी तरह ठीक नहीं

मल्होत्रा ने माना कि ऊपरी की ओर जाने वाली निश्चित रूप से कम हुए हैं, लेकिन हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा कि कच्चे तेल की कीमतें आखिर में किस स्तर पर जाकर रुकती हैं।

कच्चे तेल की कीमतों के अलावा आरबीआइ मानसून की प्रगति पर भी नजर रख रहा है। दोनों ही अनिश्चित हैं।

कूड के दाम में नरमी से सेंसेक्स 790 अंक चढ़ा

मुंबई, प्रे: कच्चे तेल के दाम में नरमी और बैंक, वित्तीय तथा आइटी शेयरों में लिवाली से स्थानीय शेयर बाजार में बुधवार को तेजी लौटी और दोनों मानक सूचकांक में करीब एक प्रतिशत की तेजी दर्ज की गई।

76,991.22 पर बंद हुआ बीएसई का वैश्विक सूचकांक 197.55 अंक बढ़कर 24,021 पर पहुंचा एनएसई निफ्टी

कंपनियों में इंटरनेट एप्लिकेशन, ट्रेड, टेक महिंद्रा, ब्राजस फाइनंसेस, आइसीआइसीआइ बैंक, इन्फोसिस, एचडीएफसी बैंक और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज प्रमुख रूप से लाभ में रहें।

28 रियल एस्टेट फर्मों ने 1.95 लाख करोड़ की संपत्तियां बेचीं

नई दिल्ली, प्रे: देश की 28 सुचीबद्ध रियल एस्टेट कंपनियों ने वित्त वर्ष 2025-26 में 1.95 लाख करोड़ रुपये की संपत्तियां बेचीं।

क्रेडिट कार्ड फ्राड में अस्थायी तौर पर ग्राहकों को राशि लौटाएं बैंक

मुंबई, प्रे: आरबीआइ ने कहा है कि क्रेडिट कार्ड के जरिये धोखाधड़ी की शिकायत मिलने के पांच दिनों में बैंक को ग्राहकों को अस्थायी तौर पर राशि वापस करनी होगी।

आरबीआइ ने डिजिटल ट्रांजेक्शन में ग्राहकों की जावबदेही को सीमित करने के लिए संशोधित फ्रेमवर्क जारी किया

केंद्र ने स्पष्ट किया- एथनाल मिश्रण पेट्रोल के उपयोग से वाहन बीमा की वैधता पर नहीं पड़ता असर

नई दिल्ली, प्रे: केंद्र सरकार ने स्पष्ट किया है कि भारत का एथनाल मिश्रण कार्यक्रम सुरक्षित, उपभोक्ताओं के अनुकूल व आर्थिक रूप से लाभकारी है।

असर के लिए अर्थनाल मिश्रण भारत की ऊर्जा सुरक्षा को बढ़ाने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ब्रिटेन में लोन रिकवरी केस हारा भगोड़ा हीरा कारोबारी नीरव मोदी

नई दिल्ली, एएनआइ: वर्ष 2019 से लंदन की जेल में बंद भगोड़े हीरा कारोबारी नीरव मोदी को बड़ा कानूनी झटका लगा है।

लंदन की कोर्ट ने बैंक आफ इंडिया को 1.07 करोड़ डॉलर चुकाने का इशारा आदेश

2012 में दुबई स्थित फायरस्टर ग्रुप को हिरे ग्रुप पर नीरव ने दी थी गारंटी

पहले 2012 में बैंक आफ इंडिया द्वारा फायरस्टर ग्रुप के अध्यक्ष एफजेडई को दिए गए ऋण से जुड़ा है।

ड्रेंट लिमिटेड का चेयरमैन पद छोड़ेंगे नोएल टाटा

मुंबई, आइएनएस: नोएल टाटा ने ड्रेंट लिमिटेड का चेयरमैन पद छोड़ने का एलान किया है।

2026 में 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों की वैन्यू 11 लाख करोड़ रुपये घटी

इन कंपनियों का कुल मूल्यंकन एक साल पहले 97 लाख करोड़ से घटकर 86 लाख करोड़ रुपये रह गया

नई दिल्ली, एएनआइ: देश की 10 सबसे मूल्यवान गैर सरकारी कंपनियों का वैल्यूएशन गत वर्ष की तुलना में 2026 में 11 लाख करोड़ रुपये कम हुआ है।

पांच आईपीएल टीमों ने भी हारून इंडिया 500 में जगह बनाई

मुंबई, प्रे: पांच आईपीएल टीमों (चेन्नई सुपर किंग्स, कोलकाता नाइट राइडर्स, पंजाब किंग्स, राजस्थान रायल्स और राहुल चैलेंजर्स बेंगलुरु) ने 2025 बरांगंडी प्रोबेटेड हारून इंडिया 500 सूची में जगह बनाई है।

300 से ज्यादा शहरों में शुरू होगी 'अमेजन नाऊ' सर्विस

नई दिल्ली, प्रे: अमेजन ने भारत में अपने क्विक कॉमर्स बिजनेस को बढ़े स्तर पर बढ़ाने की योजना का एलान किया है।

अमेजन ने 300 से ज्यादा शहरों में शुरू करेगा। यह एलान ऐसे समय में हुआ है जब कंपनी के सीईओ एंडी जेम्सो ने भारत में अपने बिजनेस को बढ़ते फोकस को दिखाते हैं, जहां कंपनी ई-कॉमर्स, लाजिस्टिक्स, क्लाउड कंसल्टिंग व एअर के क्षेत्रों में तेजी से निवेश कर रही है।

राजेश एक्सप्लोर्स ने विदेशी लेन-देन से जुड़े रिकार्ड प्रस्तुत नहीं किए: इंडी

कहा, इस वजह से लेन-देन का वास्तविक स्वरूपान लगभग नामुमकिन हुआ

नई दिल्ली, प्रे: इंडी ने बुधवार को आरोप लगाया कि सोने की रिफाइनिंग व आभूषण बनाने वाली कंपनी राजेश एक्सप्लोर्स के मुख्य कारोबारी सैकेत (का) बिजनेस इंडिकेटर्स में काफी अलग (सामान्य व्यावसायिक तरीकों से अलग थीं)।

बीएसई ने कंपनी के टिकटों पर इंडी के छावों को लेकर मंगा स्पटीकरण

नई दिल्ली, प्रे: इंडी ने बुधवार को आरोप लगाया कि सोने की रिफाइनिंग व आभूषण बनाने वाली कंपनी राजेश एक्सप्लोर्स के मुख्य कारोबारी सैकेत (का) बिजनेस इंडिकेटर्स में काफी अलग (सामान्य व्यावसायिक तरीकों से अलग थीं)।

रिकार्ड व दस्तावेज न तो मिले और न ही कंपनी ने अभी तक दिए हैं। इंडी ने दावा किया कि कंपनी के 'को बिजनेस इंडिकेटर्स' सामान्य व्यावसायिक तरीकों से काफी अलग थे। उदाहरण के तौर पर, बिजनेस प्रबंधन की दृष्टि से उच्च लेन-देन के आपरोशंस के स्केल की तुलना में बहुत कम थी।

आस्था पर चोट

हिंदू समाज में मंदिर आस्था के केंद्र होते हैं, वहां लोग मानिसक शांति और सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। साथ ही वहां स्वेच्छा से धन या अन्य सामग्री दान करते हैं,

ताकि उसका इस्तेमाल धार्मिक कार्यों में किया जा सके। श्रद्धालु इस विश्वास के साथ मंदिर में दान करते हैं कि इस राशि को खर्च करते वक्त पूरी पारदर्शिता बरती जाएगी। मगर इस दान राशि में ही अगर हेरफेर होने लगे, तो इसे लोगों की आस्था के साथ खिलवाड़ नहीं, तो और क्या कहा जाएगा। मसला जब अयोध्या में राम मंदिर से जुड़ा हो, तो मामला और भी संवेदनशील एवं गंभीर हो जाता है। राज्य सरकार ने इस मामले की जांच के लिए विशेष दल (एसआइटी) गठित किया है, जिसने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट मुख्य सचिव (गृह) को सौंप दी है। खबरों के मुताबिक, रिपोर्ट में दान राशि और कीमती सामान के प्रबंधन में कमियों का जिक्र करते हुए प्राथमिकी दर्ज करने की सिफारिश की गई है। इससे स्पष्ट है कि मंदिर के वित्तीय मामले में कुछ तो हेरफेर हुआ है, जिसकी गहन जांच की जरूरत है।

गौरतलब है कि प्रदेश सरकार ने राम मंदिर ट्रस्ट के वित्तीय प्रबंधन और दान राशि से संबंधित आरोपों की जांच के लिए 13 जून को तीन सदस्यीय विशेष जांच दल का गठन किया था। सरकार का दावा था कि एसआइटी की जांच में 'दूध का दूध और पानी का पानी' हो जाएगा। अब एसआइटी ने अपनी प्रारंभिक जांच रिपोर्ट सरकार को सौंप दी है, मगर उसे सार्वजनिक नहीं किया गया है। जांच दल के अधिकारियों का कहना है कि यह गोपनीय रिपोर्ट है और इसे मीडिया से साझा नहीं किया जा सकता है। ऐसे में अब सरकार के दावों और उसकी मंशा पर भी सवाल उठने लगे हैं। अगर जांच के दौरान मंदिर की दान राशि में किसी तरह की गड़बड़ी पाई गई है, तो उसे सार्वजनिक क्यों नहीं किया जा रहा है? जिन श्रद्धालुओं ने राम मंदिर में राशि या कीमती सामान दान किया है, क्या उन्हें यह जानने का हक नहीं है कि उसका इस्तेमाल कहाँ हुआ? अगर मंदिर के वित्तीय प्रबंधन में किसी तरह का हेरफेर कर लोगों की आस्था के साथ खिलवाड़ होता है, तो इसके लिए जवाबदेही किसकी है? अयोध्या स्थित राम मंदिर में हर साल देश-विदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु पूजा-अर्चना करने आते हैं और वहां करोड़ों रुपए का चढ़ावा चढ़ता है। ऐसे में दान राशि में गड़बड़ी से इस तीर्थ स्थल की छवि को भी नुकसान पहुंचेगा। एक सवाल यह भी उठ रहा है कि अमूमन किसी मामले में प्राथमिकी दर्ज होने के बाद जांच प्रक्रिया शुरू की जाती है, लेकिन इस मामले में पहले जांच की गई और अब एसआइटी ने प्राथमिकी दर्ज करने की सिफारिश की है। विपक्षी दलों का कहना है कि जब तब इस मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं की जाती है, तब तक कोई भी जांच बिना तीर के कमान जैसी है। ऐसे में एसआइटी न तो किसी आरोपी को पूछताछ के लिए समन भेज सकती है और न ही किसी को गिरफ्तार कर सकती है। इसके अलावा इस बात को लेकर भी संदेह जताया जा रहा है कि मौजूदा जांच निचले स्तर के कर्मियों पर केंद्रित है, जबकि राम मंदिर में उच्चस्तर पर जिम्मेदारी सभालने वालों को इससे अलग रखा गया है। बहरहाल, सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इस मामले की निष्पक्ष और गहराई से जांच हो, ताकि सभी दौषियों को न्याय के कठघरे में लाया जा सके।

चुनौतियों की राह

सरकार के तमाम दावों के बावजूद देश में आर्थिक विकास की रफ्तार धीमी पड़ती जा रही है। भारतीय रिजर्व बैंक के बाद अब वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने भी वर्ष 2026-27 में देश की आर्थिक वृद्धि दर घटकर 6.6 फीसद रहने का अनुमान जताया है। जबकि वर्ष 2025-26 में यह 7.7 फीसद और उससे पहले 7.1 फीसद थी। इसी की बदौलत भारत की गिनती दुनिया में सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में की जा रही थी। इन अनुमानों के पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ी वजह पश्चिम एशिया में संघर्ष से उपजी वैश्विक अस्थिरता है। इससे पूरी दुनिया में पैदा हुए ऊर्जा संकट का देश की अर्थव्यवस्था पर सीधा असर पड़ा है। वैश्विक आर्थिक सुस्ती का जोखिम भी सामने है। इसके अलावा अल-नीनो के प्रभाव से देश में मानसून कमजोर रहने की संभावना भी आर्थिक विकास की राह में बाधा उत्पन्न कर सकती है। स्पष्ट है कि चुनौतियां कम नहीं हैं और ऐसे में सरकार को देश की अर्थव्यवस्था को गति देने के लिए प्रभावी एवं कारगर कदम उठाने होंगे।

गौरतलब है कि पिछले दिनों भारतीय रिजर्व बैंक ने पश्चिम एशिया में संघर्ष से पैदा हुए संकट का हवाला देकर अपनी रिपोर्ट में 'चालू वित्त वर्ष में देश की आर्थिक वृद्धि दर घटकर 6.6 फीसद रहने का अनुमान जताया था। अब वैश्विक रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने भी इसकी पुष्टि कर दी है। इससे साफ है कि देश की आर्थिक वृद्धि दर सुस्त न पड़े, इसके लिए केंद्र और राज्यों सरकारों को हर मोर्चे पर तैयारी करनी होगी। ऊर्जा संकट से बाहर निकलने के लिए तेल और गैस आयात के नए विकल्पों पर विचार करने के साथ इसके नए स्रोत तलाशने होंगे। भारत इस समय कच्चे तेल की जरूरत का करीब अठ्ठासी फीसद हिस्सा आयात करता है। कच्चे तेल की लागत बढ़ने से पेट्रोल-डीजल के दामों में बढ़ोतरी का बोझ आम लोगों पर बढ़ रहा है। उत्पादन और परिवहन लागत बढ़ने से महंगाई भी बढ़ रही है। बारिश कम होने और उर्वरकों की कीमतें बढ़ने से कृषि उत्पादन पर भी असर पड़ेगा, नतीजा यह कि खाने-पीने चीजें और महंगी हो सकती है। इन सब परिस्थितियों के बीच अगर अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ा, तो आर्थिक वृद्धि दर में सुस्ती को रोकना आसान नहीं होगा।

जल संरक्षण में जवाबदेही की जरूरत



चेतनादित्य आलोक

अजकल दुनिया भर के विचारकों, चिंतकों, समाज विज्ञानियों, मानवाधिकार विशेषज्ञों, पर्यावरण वैज्ञानिकों और सरकारों को संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बुतरस घाली का लगभग तीन दशक पुराना वह कथन याद आता है, जिसमें उन्होंने दुनिया भर में पानी की कमी से जुड़ी परेशानियों के प्रति आगाह करते हुए कहा था कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए हो सकता है। निस्संदेह उन्होंने बहुत ही गंभीर समस्या की ओर इशारा किया था। मगर उनकी चेतावनी पर ज्यादातर देशों ने कोई ध्यान नहीं दिया। अगर दुनिया ने उनकी बात मान ली होती, तो क्या संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट में यह कहा जाता कि स्वच्छ पेयजल के अभाव में प्रतिवर्ष दुनिया भर में चौदह लाख से भी अधिक लोगों की मौत हो जाती है। इसलिए सभी देशों की सरकारों को जल संसाधन में निवेश करना चाहिए। वास्तव में यह दुखद स्थिति है कि साफ पीने का पानी न मिलने के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियों का शिकार होकर लाखों लोग प्रतिवर्ष अपनी जान गंवा देते हैं। जाहिर है कि दुनिया भर की सरकारों को संयुक्त राष्ट्र की बात को गंभीरता से लेते हुए जल संसाधनों के संरक्षण में निवेश का प्राथमिकता देनी चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र ने जिस निवेश की बात कही है, वह दरअसल, देशों की अर्थव्यवस्था तथा उनके नागरिकों के भविष्य में निवेश है। जब यह निवेश जन-साधारण तक शुद्ध पानी की पहुंच को सुनिश्चित करेगा, तब इसके अभाव में होने वाली बीमारियों से नागरिकों का बचाव हो सकेगा। इससे मानव संसाधन की सुरक्षा तो होगी ही, साथ ही लोगों के इलाज पर होने वाले खर्चों पर भी अंकुश लग सकेगा। इससे कई देशों की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले अनावश्यक बोझ में भी कमी आएगी। इस प्रकार, यह निवेश पानी के मामले में दुनिया के तमाम जागरूक देशों का भविष्य निश्चित रूप से सुरक्षित कर सकता है। विश्व बैंक की उस चेतावनी को याद करना चाहिए, जिसमें उसने अपने ही एक अध्ययन के आधार पर यह दावा किया है कि वैश्विक सूखे और पानी के अभाव के कारण वर्ष 2030 तक विश्व भर में लगभग सात करोड़ लोगों को विस्थापन का दर्श झेलना पड़ सकता है। विश्व बैंक की आशंका विश्व भर के जलाशयों में जल भंडारण की लचर व्यवस्था को लेकर है, जो बिल्कुल सही प्रतीत होती है। ऐसे में विस्थापितों का आंकड़ा उसके आंकड़े से अधिक भी हो सकता है।

भारत की बात करें, तो देश के प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण की व्यवस्था आज भी लचर बनी हुई है और इसमें सुधार होने के बजाय यह लगातार बिगड़ती जा रही है। जलाशयों और नदियों की निगरानी करने वाले केंद्रीय जल आयोग के आंकड़ों के अनुसार, देश भर के सभी 166 जलाशयों में जल भंडारण 40 फीसद से भी नीचे गिर गया है। वहीं, देश के सभी 20 नदी बेसिनों में भी जलस्तर लगातार घटता जा रहा है। असम, गोवा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, त्रिपुरा और पश्चिम बंगाल के जलाशयों में जलस्तर पिछले वर्ष की तुलना में काफी कम हो गया है।

प्रतिस्पर्धा के मायने

शोभा जैन

इन दिनों शिक्षा, साहित्य, कला या खेल से लेकर स्वास्थ्य एवं धार्मिक क्षेत्र तक, हर जगह प्रतिस्पर्धा में अपनी जगह बना ली है। देखा जाए तो हमारे जीवन का अधिकांश हिस्सा दूसरों के साथ निरंतर प्रतिस्पर्धा में व्यतीत होता है- स्कूल में दाखिले से लेकर नौकरी के आवेदनों तक। कोई भी व्यक्ति संगठन, संस्था, समिति या समुदाय हो, मूल उद्देश्य से अधिक चिंता प्रतिस्पर्धा की चुनौती की है। समाज को प्रतिभागी प्रवृत्ति को अपनाना चाहिए, लेकिन वह प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्ति की ओर जा रहा है। आज के दौर में प्रतिस्पर्धा हमारे कार्यक्षेत्र का एक हिस्सा हो सकती है, लेकिन उसका नैतिक आधार मापना जरूरी है। हर कलाकार अपने अंदर प्रतियोगिता जीता है। यह प्रतियोगिता वह समकालीनों से तो करता ही है, अतीत से भी करता है और अपने भविष्य से भी। यह प्रतियोगी-भाव ईर्ष्या, द्वेष, छल-छद्म या षड्यंत्र तक पैदा कर देता है। राजनीति में तो प्रतिस्पर्धा आंतरिक और बाह्य दोनों स्तर पर बराबर होती है।

जीवन में प्रतिस्पर्धा का गैर स्वभाविक पक्ष भी है। इस कदम से एक ऐसी खाई पैदा होनी शुरू हो गई है, जिसके एक सिरे पर गुणवत्ता है, गहराई है, उसके अपने सरोकार हैं और जीवन मूल्य हैं, जो दरती हैं, जिसे बाजार प्रचारित भी करता है। दूसरी ओर ऐसी प्रतिस्पर्धा भी है, जिसमें कोई गुणवत्ता नहीं, जिसके कोई सरोकार नहीं, जिसमें जीवन के सच्चे अनुभव नहीं। उसे तमाम तरह के तरीकों के जरिए बाजार में खपा दिया जाता है। अब चूकित सतह पर बहुतायत में यही दिखाई देता है, इसलिए पहले प्रतिस्पर्धा एक नवाचार भी लाती थी, अब केवल प्रतियोगी खड़ा करती है।

पहले गुणवत्ता और श्रेष्ठता की छननी भी लगती थी, मगर अब सफलता के लघुपथ भी इसी दूसरे किस्म की प्रतिस्पर्धा की देन है, जिसका काम केवल बाजार को विस्तार देना है। एक ही चीज के कितने ब्रांड बाजार में उपलब्ध हो गए, ये सब प्रतिस्पर्धा का ही प्रतिफल है। सबसे मूल्य अलग, जबकि उपयोगिता समान है। एक औसत आर्थिक स्थिति वाला उपभोक्ता जीवन की अनिवार्य आवश्यकता के लिए किसी एक ब्रांड का चयन करता है, लेकिन अक्सर वहां भी टंगा जाता है। ऐसे में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा किसके कहेंगे?

वहीं, प्रतिस्पर्धा का चेतना संपन्न बौद्धिक पक्ष यह है कि प्रतिस्पर्धा मानसिक गुलामी का कारण न बने। प्रतियोगी होने पर भी प्रत्यक्ष भेंट वार्ताएं सम्मानजनक स्थिति में दर्ज हों, स्वस्थ संवाद बाधित न हो। आज संवाद की संभावना कितनी शेष बची है हमारे बीच कभी-कभी इस पर भी विचार कर लेना चाहिए। मनुष्य



आयोग ने नौ अप्रैल 2026 को जारी अपने बुलेटिन में जलस्तर में तेजी से गिरावट की चेतावनी दी थी। फिर 30 अप्रैल के अपने बुलेटिन में भी आयोग ने बताया था कि इन जलाशयों में उपलब्ध सक्रिय भंडारण 71.082 अरब घन मीटर (बीसीएम) है, जो इनकी कुल क्षमता का केवल 38.72 फीसद

देश के प्रमुख जलाशयों में जल भंडारण की व्यवस्था आज भी लचर बनी हुई है और इसमें सुधार होने के बजाय यह लगातार बिगड़ती जा रही है। जलाशयों और नदियों की निगरानी करने वाले केंद्रीय जल आयोग के आंकड़ों के अनुसार, देश भर के सभी 166 जलाशयों में जल भंडारण 40 फीसद से भी नीचे गिर गया है। वहीं, देश के सभी 20 नदी बेसिनों में भी जलस्तर लगातार घटता जा रहा है। ऐसे में जरूरी है कि समाज अब जल स्रोतों, विशेष रूप से भूजल स्रोतों के संरक्षण और उनके सदुपयोग के प्रति जागरूक एवं जवाबदेह बने। वर्षा जल एवं अपशिष्ट जल के शोधित स्वरूप के उपयोग के प्रति भी समाज को अपने नकारात्मक रुए में बदलाव लाना होगा, नहीं तो परिस्थितियां और भी जटिल हो सकती हैं।

ही है, जबकि नौ अप्रैल को यह 44.71 फीसद था। यानी महज 21 दिनों में ही देश के सक्रिय जल भंडारण में छह फीसद से अधिक की कमी आ गई।

दुनिया मेरे आगे

यह अक्सर देखने में आता है कि युवाओं ने प्रतिस्पर्धा के चलते अपने भीतर अवसाद को ग्रहण कर लिया है। वे अपनी कठिनाइयां, संघर्ष और द्वंद कठिनाइयां, संघर्ष और द्वंद किसी से साझा नहीं करते। स्वयं को कमजोर साबित किए जाने का डर और प्रतियोगिता से बाहर हो जाने का संशय उनके मानस पर बना रहता है। असफलता में जीवन से हार मानने की स्थिति इसी से पैदा होती है। कुछ लोग अपेक्षाकृत कम प्रतिस्पर्धी होते हैं, कुछ अधिक और कुछ तो हर परिस्थिति में जीतने के लिए जुनूनी प्रतीत होते हैं। मनोवैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि अत्यधिक प्रतिस्पर्धी लोगों में प्रेरणा मुख्य रूप से आंतरिक कारकों के बजाय बाहरी कारकों से आती है। जो लोग किसी कार्य में महारत हासिल

करने की इच्छा से प्रेरित होते हैं या जिनका आत्मसम्मान उच्च होता है, उनमें प्रतिस्पर्धा के प्रति जुनून होने की संभावना कम होती है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति अपनी आत्म-योग्यता मुख्य रूप से जीतने से या जीतने से मिलने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा और मूर्त पुरस्कारों से प्राप्त करते हैं, उनमें अस्वस्थ स्तर तक प्रतिस्पर्धी होने की संभावना अधिक होती है। प्रतिस्पर्धा का उद्देश्य अपनी छिपी हुई क्षमता को हासिल करना होना चाहिए। याद रखिए, आप अपने भविष्य के स्वरूप को कभी नहीं हरा सकते। आपके भविष्य का स्वरूप हमेशा आपसे एक कदम आगे होगा। बस, इसके लिए आपको प्रतिस्पर्धा अपने अतीत से रखनी होगी, किसी व्यक्ति से नहीं।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

अनदेखी की आग

लखनऊ में एक व्यावसायिक इमारत में आग लगने की घटना हृदयविदारक है। इस तरह की घटनाएं रूकने का नाम नहीं ले रही हैं। अब तो सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आखिर अनदेखी की यह आग कब बुझेगी? इन घटनाओं की पुनरावृत्ति अधिकांश और कर्मियों की लापरवाही की पोल खोल रही है। नियम-कानून और सुरक्षा उपायों की अनदेखी के कारण निर्दोष लोगों की जान जा रही है। अब तो यह कड़वी सच्चाई स्वीकार करनी होगी कि आग नहीं, बल्कि गैर जिम्मेदार व्यवस्था लोगों की जान ले रही है। यह व्यवस्था ही है, जो अपनी जिम्मेदारी निभाने में अक्षम साबित हो रही है। आज देश में कई जगहों पर आग लगने की घटनाएं हो रही हैं। ऐसा लगता है कि देश को अनदेखी का 'लाक्षागृह' बनाया जा रहा है। किसी की कोई जवाबदेही तय नहीं है। सभी नौद में सोए हुए हैं। देश की व्यवस्था में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। चंद रुपए के आगे इंसान की कोई कीमत नहीं रह गई है। आम आदमी की हैरियत चुनाव के समय महज एक वोट से ज्यादा कुछ नहीं है, शेष समय उसका कोई अस्तित्व नहीं रह गया है।

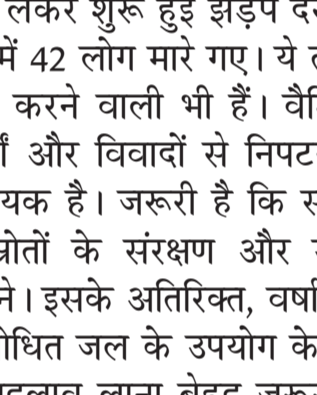
पहले जब परीक्षाओं की बात की जाती थी, तो लगता था कि सब कुछ सही है। बच्चों को केंद्रित करते हुए सभी इंतजाम किए गए होंगे। मगर आज जैसे ही परीक्षा का समय आता है, कई खामियां नजर आने लगती हैं। फिर बार-बार संशोधन पत्र जारी किए जाते हैं। कभी प्रवेशपत्र में अभ्यर्थी के नाम की जगह किसी और का नाम, तो कभी परीक्षा केंद्र देश से बाहर होता है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। व्यवस्था से जुड़े

हलके जल परीक्षाओं की बात की जाती थी, तो लगता था कि सब कुछ सही है। बच्चों को केंद्रित करते हुए सभी इंतजाम किए गए होंगे। मगर आज जैसे ही परीक्षा का समय आता है, कई खामियां नजर आने लगती हैं। फिर बार-बार संशोधन पत्र जारी किए जाते हैं। कभी प्रवेशपत्र में अभ्यर्थी के नाम की जगह किसी और का नाम, तो कभी परीक्षा केंद्र देश से बाहर होता है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। व्यवस्था से जुड़े

हलके जल परीक्षाओं की बात की जाती थी, तो लगता था कि सब कुछ सही है। बच्चों को केंद्रित करते हुए सभी इंतजाम किए गए होंगे। मगर आज जैसे ही परीक्षा का समय आता है, कई खामियां नजर आने लगती हैं। फिर बार-बार संशोधन पत्र जारी किए जाते हैं। कभी प्रवेशपत्र में अभ्यर्थी के नाम की जगह किसी और का नाम, तो कभी परीक्षा केंद्र देश से बाहर होता है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। व्यवस्था से जुड़े

अक्सर हम अपने जीवन में जाने-अनजाने दूसरों की कमियों पर चर्चा करने लगते हैं। क्या कभी किसी ने सोचा है कि दूसरों की बुराई करने या उनकी निंदा करने की आदत का हमारे स्वयं के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है? जिस प्रकार दीमक बाहर से मजबूत दिखने वाली लकड़ी को अंदर ही अंदर खोखला कर देती है, ठीक उसी प्रकार दूसरों की बुराई करने की आदत हमारे चरित्र को भीतर से कमजोर कर देती है। जब हम अपना कीमती समय और ऊर्जा दूसरों की कमियां निकालने में खर्च करते हैं, तो हम अनजाने में अपने अंदर नकारात्मकता को पनपने देते हैं। यह आदत धीरे-धीरे हमारी सोचने की शक्ति, हमारी सकारात्मकता और आत्मविश्वास को नष्ट करने लगती है। अक्सर लोग दूसरों को छोटा दिखा कर खुद को बड़ा समझने की भूल करते हैं।

- प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना



लखनऊ में एक व्यावसायिक इमारत में आग लगने की घटना हृदयविदारक है। इस तरह की घटनाएं रूकने का नाम नहीं ले रही हैं। अब तो सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि आखिर अनदेखी की यह आग कब बुझेगी? इन घटनाओं की पुनरावृत्ति अधिकांश और कर्मियों की लापरवाही की पोल खोल रही है। नियम-कानून और सुरक्षा उपायों की अनदेखी के कारण निर्दोष लोगों की जान जा रही है। अब तो यह कड़वी सच्चाई स्वीकार करनी होगी कि आग नहीं, बल्कि गैर जिम्मेदार व्यवस्था लोगों की जान ले रही है। यह व्यवस्था ही है, जो अपनी जिम्मेदारी निभाने में अक्षम साबित हो रही है। आज देश में कई जगहों पर आग लगने की घटनाएं हो रही हैं। ऐसा लगता है कि देश को अनदेखी का 'लाक्षागृह' बनाया जा रहा है। किसी की कोई जवाबदेही तय नहीं है। सभी नौद में सोए हुए हैं। देश की व्यवस्था में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। चंद रुपए के आगे इंसान की कोई कीमत नहीं रह गई है। आम आदमी की हैरियत चुनाव के समय महज एक वोट से ज्यादा कुछ नहीं है, शेष समय उसका कोई अस्तित्व नहीं रह गया है।

पहले जब परीक्षाओं की बात की जाती थी, तो लगता था कि सब कुछ सही है। बच्चों को केंद्रित करते हुए सभी इंतजाम किए गए होंगे। मगर आज जैसे ही परीक्षा का समय आता है, कई खामियां नजर आने लगती हैं। फिर बार-बार संशोधन पत्र जारी किए जाते हैं। कभी प्रवेशपत्र में अभ्यर्थी के नाम की जगह किसी और का नाम, तो कभी परीक्षा केंद्र देश से बाहर होता है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। व्यवस्था से जुड़े

हलके जल परीक्षाओं की बात की जाती थी, तो लगता था कि सब कुछ सही है। बच्चों को केंद्रित करते हुए सभी इंतजाम किए गए होंगे। मगर आज जैसे ही परीक्षा का समय आता है, कई खामियां नजर आने लगती हैं। फिर बार-बार संशोधन पत्र जारी किए जाते हैं। कभी प्रवेशपत्र में अभ्यर्थी के नाम की जगह किसी और का नाम, तो कभी परीक्षा केंद्र देश से बाहर होता है। आखिर इसके लिए कौन जिम्मेदार है। व्यवस्था से जुड़े

अक्सर हम अपने जीवन में जाने-अनजाने दूसरों की कमियों पर चर्चा करने लगते हैं। क्या कभी किसी ने सोचा है कि दूसरों की बुराई करने या उनकी निंदा करने की आदत का हमारे स्वयं के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ता है? जिस प्रकार दीमक बाहर से मजबूत दिखने वाली लकड़ी को अंदर ही अंदर खोखला कर देती है, ठीक उसी प्रकार दूसरों की बुराई करने की आदत हमारे चरित्र को भीतर से कमजोर कर देती है। जब हम अपना कीमती समय और ऊर्जा दूसरों की कमियां निकालने में खर्च करते हैं, तो हम अनजाने में अपने अंदर नकारात्मकता को पनपने देते हैं। यह आदत धीरे-धीरे हमारी सोचने की शक्ति, हमारी सकारात्मकता और आत्मविश्वास को नष्ट करने लगती है। अक्सर लोग दूसरों को छोटा दिखा कर खुद को बड़ा समझने की भूल करते हैं।

- प्रसिद्ध यादव, फुलवारी, पटना

Lifetime Free Newspapers Access

Editorials PDF

- 📌 English Editorials PDF with International Neespapers Editorials [35-40pages]
- 📌 Hindi Editorials PDF
- 📌 Daily Vocabulary PDF

Magazine Channel

National & International
[Genaral & Exam related]

International Newspapers

Newspapers around world.
Asian, Europian & American

Hindi Newspapers

- 1) दैनिक जागरण
- 2) जनसत्ता
- 3) हरिभूमि
- 4) हिंदुस्तान

Indian Newspapers Channel

1. The Indian Express

2. The Hindu

3. Business Line

4. Financial Express

5. Times of India

6. Hindustan Times

7. Economic Times

8. Live Mint

9. Business Standard

Click below to Join
this Community 📌

